



NEERAJ®

वैश्विक राजनीति (Global Politics)

B.P.S.C.- 110

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Harmeet Kaur



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

वैश्विक राजनीति (Global Politics)

Question Paper—June-2024 (Solved)	1
Question Paper—December-2023 (Solved)	1
Question Paper—June-2023 (Solved)	1
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2
Question Paper Exam Held in July 2022 (Solved)	1
Sample Question Paper–1 (Solved)	1
Sample Question Paper–2 (Solved)	1

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
--------------	-----------------------------------	-------------

वैश्वीकरण : धारणाएँ एवं दृष्टिकोण

(Globalisation: Conceptions and Perspectives)

1. वैश्वीकरण की समझ	1
(Understanding Globalisation)	
2. राज्य की संप्रभुता एवं अधिकार क्षेत्र	14
(State Sovereignty and Jurisdiction)	
3. वैश्विक अर्थव्यवस्था एवं वित्तीय संस्थाएँ (आईएमएफ, विश्व बैंक)	23
(Global Economy and Financial Architecture) (IMF, World Bank)	
4. वैश्विक व्यापार व्यवस्था (डब्ल्यूटीओ एवं अन्य)	36
(Global Trading System [WTO and Others])	
5. एमएनसी और टीएनसी की कार्य-प्रणाली	48
(Working of MNCs and TNCs)	

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
-------	----------------------------	------

6. वैश्वीकरण-सांस्कृतिक एवं प्रौद्योगिकी आयाम 57
(Globalisation-Cultural and Technological Dimensions)

समकालीन वैश्विक मुद्दे (Contemporary Global Issues)

7. वैश्विक राजनीति और पर्यावरण 65
(Global Politics and Environment)
8. सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार की चुनौतियाँ 79
(Challenges of the Proliferation of Weapons of Mass Destruction)
9. सुरक्षा के गैर-पारंपरिक खतरे 89
(Non-Traditional Security Threats)
10. शरणार्थी और आव्रजन 103
(Refugees and Migration)
11. मानव सुरक्षा 117
(Human Security)

समकालीन अंतर्राष्ट्रीय संबंध (Contemporary International Relations)

12. वैश्विक प्रतिरोध (वैश्विक सामाजिक आंदोलन और गैर-सरकारी संगठन) 126
(Global Resistances [Global Social Movements and NGOs])
13. वैश्वीकरण पर वैकल्पिक दृष्टिकोण 135
(Alternative Perspectives on Globalisation)



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

वैश्विक राजनीति
(Global Politics)

B.P.S.C.-110

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

प्रश्न 1. राज्य की संप्रभुता पर वैश्वीकरण के प्रभाव का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-17, प्रश्न 3

प्रश्न 2. पेरिस जलवायु समझौते पर भारत की प्रतिबद्धताएँ और प्रगति क्या हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-74, प्रश्न 6

प्रश्न 3. परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने की दिशा में अंतराष्ट्रीय समुदाय के प्रयासों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-80, 'अंतराष्ट्रीय अप्रसार व्यवस्था'

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(अ) नव-उदारवाद की मूल धारणाएँ

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-30, प्रश्न 4

(ब) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और वैश्विक मूल्य शृंखला

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-52, प्रश्न 3

खण्ड-ब

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(अ) गैर-पारम्परिक सुरक्षा खतरे

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-92, प्रश्न 1

(ब) विश्व व्यापार संगठन के कामकाज का मार्गदर्शन करने वाले नियम

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-46, प्रश्न 1

प्रश्न 6. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(अ) मानव सुरक्षा

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-125, प्रश्न 3

(ब) अतिवैश्विकवादी

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-13, पृष्ठ-142, प्रश्न 5, '1. अतिवैश्विकवादी'

प्रश्न 7. शरणार्थियों की समस्याओं से निपटने के अंतराष्ट्रीय प्रयासों पर भारत की स्थिति का परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10 पृष्ठ-106, 'शरणार्थी समस्या पर भारत की धारणा और प्रतिक्रिया'

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(अ) वाणिज्यवाद

उत्तर-वाणिज्यवाद (Mercantilism) 16वीं से 18वीं शताब्दी में यूरोप में प्रचलित एक आर्थिक सिद्धान्त तथा व्यवहार का नाम है, जिसके अन्तर्गत राज्य की शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से राष्ट्र की अर्थव्यवस्थाओं का सरकारों द्वारा नियंत्रण को प्रोत्साहन मिला।

मुन (Mun) के 'England's Treasure by Foreign Trade' नामक ग्रन्थ का मुखपृष्ठ (1664) व्यापारिक क्रांति ने एक नवीन आर्थिक विचारधारा को जन्म दिया। इसका प्रारम्भ सोलहवीं शताब्दी में हुआ। इस नवीन आर्थिक विचारधारा को वाणिज्यवाद, वाणिज्यवाद या व्यापारवाद कहा गया है। फ्रांस में इस विचारधारा को कोल्बर्टवाद और जर्मनी में केमरलिज्म कहा गया। 1776 ई. में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने भी अपने ग्रन्थ 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' में इसका विवेचन किया है।

वाणिज्यवाद से अभिप्राय उस आर्थिक विचारधारा से है जो पश्चिमी यूरोप के देशों में विशेषकर फ्रांस, इंग्लैण्ड और जर्मनी में सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में प्रसारित हुई थी और अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक इसका खूब विकास हुआ। वाणिज्यवाद की धारणा अंतराष्ट्रीय व्यापार और उससे प्राप्त धन से संबंधित है। इस वाणिज्यवाद के सिद्धांत के अनुसार कृषि और उसके उत्पादन की कुछ सीमा तक ही वृद्धि कर सकते हैं। कृषि आर्थिक दृष्टि से कुछ सीमा के बाद अनुत्पादक भी हो सकती है, पर उद्योगों, व्यवसायों और वाणिज्य व्यापार की वृद्धि और विस्तार की कोई सीमा नहीं है। औद्योगीकरण से और व्यापार की नियमित वृद्धि से देश सोना-चांदी प्राप्त कर समृद्ध और शक्तिशाली होगा। यह वाणिज्यवाद का मूल सिद्धांत है। वाणिज्यवाद में व्यापारी वर्ग, व्यवस्थित, सुनिश्चित और नियमित वाणिज्य-व्यापार और सोने-चांदी की प्राप्ति और संगठन पर अधिक बल दिया गया। "अधिक स्वर्ण प्राप्त कर अधिक बलशाली बने" यह वाणिज्यवाद का नारा था। अधिक धन संग्रह से देश की आर्थिक शक्ति और सम्पन्नता बढ़ती है। इससे राजनीतिक लक्ष्य सरलता से प्राप्त किए जा सकते हैं। आंतरिक शान्ति और बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा प्राप्त हो सकती है, इसलिए शासक, राजनीतिज्ञ, विचारक, अर्थशास्त्री, प्रशासक और व्यापारी वर्ग ने वाणिज्यवाद का समर्थन किया।

(ब) वैश्वीकरण पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-13 पृष्ठ-140, 'वैश्वीकरण का मार्क्सवादी दृष्टिकोण'



QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

वैश्विक राजनीति
(Global Politics)

B.P.S.C.-110

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-I

प्रश्न 1. वैश्वीकरण और संप्रभुता के बीच संबंधों की जाँच कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-6, प्रश्न 4

प्रश्न 2. डब्ल्यू.टी.ओ. के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों और मार्गदर्शक सिद्धांतों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-37, 'विश्व व्यापार संगठन मूल्य, सुविधाएँ और तंत्र।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-
(क) वणिक्वाद

उत्तर-वाणिज्यवाद (Mercantilism) 16वीं से 18वीं शताब्दी में यूरोप में प्रचलित एक आर्थिक सिद्धान्त तथा व्यवहार का नाम है, जिसके अन्तर्गत राज्य की शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से राष्ट्र की अर्थव्यवस्थाओं का सरकारों द्वारा नियंत्रण को प्रोत्साहन मिला।

मुन (Mun) के 'England's Treasure by Foreign Trade' नामक ग्रन्थ का मुखपृष्ठ (1664) व्यापारिक क्रांति ने एक नवीन आर्थिक विचारधारा को जन्म दिया। इसका प्रारम्भ सोलहवीं शताब्दी में हुआ। इस नवीन आर्थिक विचारधारा को वाणिज्यवाद, वणिक्वाद या व्यापारवाद कहा गया है। फ्रांस में इस विचारधारा को कोल्बर्टवाद और जर्मनी में केमरलिज्म कहा गया। 1776 ई. में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने भी अपने ग्रन्थ 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' में इसका विवेचन किया है।

वाणिज्यवाद से अभिप्राय उस आर्थिक विचारधारा से है जो पश्चिमी यूरोप के देशों में विशेषकर फ्रांस, इंग्लैण्ड और जर्मनी में सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में प्रसारित हुई थी और अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक इसका खूब विकास हुआ। वाणिज्यवाद की धारणा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और उससे प्राप्त धन से संबंधित है। इस वाणिज्यवाद के सिद्धांत के अनुसार कृषि और उसके उत्पादन की कुछ सीमा तक ही वृद्धि कर सकते हैं। कृषि आर्थिक दृष्टि से कुछ सीमा के बाद अनुत्पादक भी हो सकती है, पर उद्योगों, व्यवसायों और वाणिज्य व्यापार की वृद्धि और विस्तार की कोई सीमा नहीं है। औद्योगीकरण से और व्यापार की नियमित वृद्धि से देश सोना-चांदी प्राप्त कर समृद्ध और शक्तिशाली होगा। यह वाणिज्यवाद का मूल सिद्धांत है। वाणिज्यवाद में व्यापारी वर्ग, व्यवस्थित, सुनिश्चित और

नियमित वाणिज्य-व्यापार और सोने-चांदी की प्राप्ति और संगठन पर अधिक बल दिया गया। "अधिक स्वर्ण प्राप्त कर अधिक बलशाली बनो" यह वाणिज्यवाद का नारा था। अधिक धन संग्रह से देश की आर्थिक शक्ति और सम्पन्नता बढ़ती है। इससे राजनीतिक लक्ष्य सरलता से प्राप्त किए जा सकते हैं। आंतरिक शान्ति और बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा प्राप्त हो सकती है, इसलिए शासक, राजनीतिज्ञ, विचारक, अर्थशास्त्री, प्रशासक और व्यापारी वर्ग ने वाणिज्यवाद का समर्थन किया।

(ख) नव-उदारवाद

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-26, 'नवउदारवाद'

प्रश्न 4. वैश्विक अर्थव्यवस्था में टी.एन.सी. की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-49, 'वैश्विक अर्थव्यवस्था में टी.एन.सी.'

खण्ड-II

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) वैश्वीकरण का सांस्कृतिक आयाम

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-60, प्रश्न 2

(ख) पर्यावरण सुरक्षा का अधिकार

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-67, 'पर्यावरण सुरक्षा का अधिकार'

प्रश्न 6. प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण में चिंता के प्रमुख क्षेत्र क्या हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-67, 'चिंता का विषय'

प्रश्न 7. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) गैर-पारंपरिक सुरक्षा

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-89, 'गैर-पारंपरिक सुरक्षा : अवधारणा और सामग्री'

(ख) भारत और शरणार्थियों पर अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-111, प्रश्न 4

प्रश्न 8. वैश्विक सामाजिक आंदोलनों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-133, प्रश्न 3



Sample Preview of The Chapter

Published by:



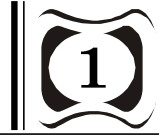
**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

वैश्विक राजनीति (Global Politics)

वैश्वीकरण : धारणाएँ एवं दृष्टिकोण (Globalisation: Conceptions and Perspectives)

वैश्वीकरण की समझ (Understanding Globalisation)



परिचय

1980 के दशक के बाद से वैश्वीकरण शब्द एक चर्चित विषय बन गया। आरंभिक समय में वैश्वीकरण को विभिन्न तरीकों से व्यक्त किया गया है, जैसे कि एक प्रक्रिया, एक स्थिति, एक बल, एक प्रणाली और एक युग आदि। चूँकि वैश्वीकरण एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है, इसलिए यह कई क्षेत्रों को शामिल करती है, जैसे—राजनीति, अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिकी, समाज और संस्कृति। यह माना गया है कि वैश्वीकरण एक विषय में सीमित न होकर विभिन्न घटनाओं से संबंधित है, जिसमें नई सूचना प्रौद्योगिकी, पश्चिमी और अमेरिकी जीवन, मुक्त बाजार नीतियाँ आदि शामिल हैं। इस प्रकार वैश्वीकरण एक प्रक्रिया न होकर विभिन्न प्रक्रियाओं का संयोजन मानी गई है।

अध्याय का विहंगावलोकन

वैश्वीकरण का अर्थ एवं विशेषताएँ

एंथनी गिडेंस के अनुसार वैश्वीकरण का अर्थ 'दुनिया भर के सामाजिक संबंधों में निकटता से है' जो दूर के क्षेत्रों को इस तरह से जोड़ता है कि काफी दूरी पर घटने वाली घटनाओं से स्थानीय घटनाएँ प्रभावित होती हैं। डेविड हार्वे इसे 'टाइम स्पेस कम्प्रेसन' कहते हैं। डेविड हेल्ड इसका अर्थ एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते हैं, जो सामाजिक संबंधों और विनिमय के स्थानिक संगठन में परिवर्तन का प्रतीक है, जिसका मूल्यांकन उसकी व्यापकता, तीव्रता, वेग और प्रभाव द्वारा दर्शाया जाता है, जो अंतरक्षेत्रीय प्रवाह और गतिविधियों के माध्यम से संचार, संपर्क और शक्ति उत्पन्न करता है। वैश्वीकरण से जुड़ी पाँच विशेषताओं में शामिल हैं—क्षेत्रीयता से परे, अंतर्संबंध, गति, दीर्घकालिक प्रक्रिया और बहुस्तरीय प्रक्रिया आदि। वैश्वीकरण की उत्पत्ति के दो दृष्टिकोण हैं—भौतिकवादी दृष्टिकोण और आदर्श दृष्टिकोण। जॉर्ज

रिज्जर के अनुसार वैश्वीकरण भौतिक और आदर्श दोनों कारकों का परिणाम है।

वैश्वीकरण के चरण

एडम स्मिथ की पुस्तक वेल्थ ऑफ नेशंस में वैश्वीकरण एक प्रमुख विषय रहा है, जिसमें आर्थिक विकास को समय के साथ बाजारों का एकीकरण माना गया है। वैश्वीकरण विशेषताओं में भ्रतभेद है। इसके तीन दृष्टिकोण हैं, पहला दृष्टिकोण द्वारा वैश्वीकरण को एक ऐतिहासिक प्रक्रिया माना गया है, जो कि चक्रों में हुई मानी गई, दूसरे दृष्टिकोण में रैखिक और तीसरा दृष्टिकोण एक नई घटना मानता है।

ए.जी. हॉपकिंस द्वारा वैश्वीकरण के चार चरणों को अपनी पुस्तक 'ग्लोबलाइजेशन इन वर्ल्ड हिस्ट्री' में व्यक्त किया गया। पहला चरण पुरातन वैश्वीकरण औद्योगिकीकरण और आधुनिक राष्ट्रों के उदय से पूर्व का माना गया। इसमें आदिवासी नेता, समुद्री और थल व्यापारी आदि थे। दूसरा चरण प्रोटो वैश्वीकरण, जो 1600 से 1800 के बीच व्यापारी और दास व्यापारी आदि कारकों के साथ उभरा था। तीसरा चरण आधुनिक वैश्वीकरण है, जिसमें 19वीं शताब्दी के औपनिवेशिक प्रवृत्तियों, विज्ञान समुदाय और सरकारी संगठन आदि जुड़े हुए थे। चौथा चरण 20वीं शताब्दी में बहुराष्ट्रीय निकायों से उत्पन्न वैश्वीकरण है, इसमें राजनीतिक, व्यावसायिक अभिजात वर्ग, आप्रवासी और संचार प्रमुख कारक थे। स्टीगर ने अपनी पुस्तक 'ग्लोबलाइजेशन : ए वेरी शार्ट इंट्रोडक्शन' में वैश्वीकरण के पाँच चरण माने, जैसे कि 10000 ई.पू. से 3500 ई. पू., आधुनिक काल 3500-1500 ई.पू., प्रारंभिक आधुनिक काल 1500-1750 ई.पू., आधुनिक काल 1750-1970 और समकालीन प्रणाली 1970 के बाद है।

स्कॉल्ट ने वैश्वीकरण के तीन चरण माने हैं—पहला चरण 500 साल पहले, दूसरा चरण 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और तीसरा चरण 1960 से अब तक माना गया है।

एंथनी गिडेंस के अनुसार वैश्वीकरण एक नहीं, बल्कि कई प्रक्रियाओं का संयोजन है, जैसे कि राजनीतिक, तकनीकी और सांस्कृतिक इत्यादि।

वैश्वीकरण के प्रकार

एंड्रयू हेवुड ने वैश्वीकरण के तीन प्रकार बताए हैं—आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक।

1. **आर्थिक वैश्वीकरण**—इस विचार में एक सम्मिलित वैश्विक अर्थव्यवस्था है, जिसमें विभिन्न अर्थव्यवस्थाएँ शामिल हैं। आर्थिक वैश्वीकरण द्वारा राष्ट्रीय सरकारों के अर्थव्यवस्थाओं के प्रबंधन और पुनर्गठन का विरोध करने की क्षमता को सीमित कर दिया है।

2. **सांस्कृतिक वैश्वीकरण**—इस प्रक्रिया से विश्व की सूचना द्वारा व्यक्तियों, राष्ट्रों और क्षेत्रों के बीच सांस्कृतिक अंतर को कम किया गया है।

3. **राजनैतिक वैश्वीकरण**—इसमें राज्य को महत्त्व दिया जाता है। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय संगठन अधिकार क्षेत्र का उपयोग करते हैं।

डेविड हेल्ड के अनुसार सैन्य क्षेत्र में वैश्वीकरण भू-राजनीतिक विरोध और शक्तियों के साम्राज्यवाद, अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन तंत्र और सुरक्षा ढाँचों के विकास, सैन्य प्रौद्योगिकियों के साथ विश्व व्यापार के उद्भव, सैन्य और सुरक्षा पर अधिकार क्षेत्र के साथ वैश्विक शासन के संस्थागतकरण के मामले में दिखाई देता है। राबर्ट किओहेन और जोसेफ नाइ के अनुसार, सैन्य वैश्वीकरण में अंतर-निर्भरता की लंबी दूरी के नेटवर्क, जिसमें बल और बल का खतरा शामिल होते हैं।

मैनफ्रेड स्टीगर द्वारा पारिस्थितिक वैश्वीकरण आयाम जोड़ा है। उनके अनुसार पारिस्थितिक समस्याएँ वैश्विक हैं। इसे एक रूढ़िगत प्रतिक्रिया माना गया है। जॉर्ज रिट्जर द्वारा धर्म, विज्ञान और खेल जैसे दूसरे आयामों को शामिल किया गया, जिसमें वैश्वीकरण भी शामिल है।

डिजिटल वैश्वीकरण

इसे वैश्वीकरण 4.0 के रूप में व्यक्त किया गया है, जिसकी शुरुआत 1980 के दशक से शुरू हुई, जैसे कि इंटरनेट, ई-बैंकिंग और ई-कॉमर्स आदि। वर्ष 2000 में व्यापार, आयात और निर्यात का योग बढ़कर वैश्विक जीडीपी का आधा हो गया। चौथी औद्योगिक क्रांति, ए.आई. रोबोटिक्स के रूप में शुरू हुई, जो कि वैश्वीकरण तथा तकनीकी अर्थव्यवस्थाओं और व्यापार को एक नया आकार देगी।

वैश्वीकरण के कारण कई प्रतिक्रियाएँ हुईं जैसे कि बढ़ती असमानता, सामाजिक अस्थिरता, सांस्कृतिक तनाव, ग्लोबल वार्मिंग आदि। कई देशों ने इसके विरुद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त की है, जैसे कि अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप आदि देशों का मानना है कि वाम उदारवादी और रूढ़िवादी राजनीतिक क्षेत्र एक-दूसरे से दूर हो रहे हैं, परंतु आदर्श दृष्टिकोण के अनुसार वैश्वीकरण का समर्थन विभिन्न देश कर रहे हैं, जैसे कि भारत और चीन।

वैश्वीकरण के सिद्धांत

वैश्वीकरण में एक मुक्त बाजार उन्मुखीकरण देखा गया है। एक बहस के अनुसार बाजार संरचनाओं के लिए कोई व्यवहार्य अन्य विकल्प नहीं है। वैश्वीकरण के तीन मुख्य सिद्धांत अति वैश्विकतावादी, संशयवादी तथा परिवर्तनवादी हैं।

अति वैश्विकतावादी

पूँजी की गतिशीलता, निर्भरता और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बढ़ती भूमिका के कारण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रथम लहर के रूप में अति वैश्विकतावादी अर्थव्यवस्था कहा गया है। इसके समर्थकों के अनुसार वैश्वीकरण का यह चरण राष्ट्र-राज्यों के लिए अहितकर है क्योंकि यह आर्थिक परिवर्तन राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों को दिशा दिखाता है। उनके अनुसार अगर राज्य अपनी शक्ति, प्रभाव और संप्रभुता खो देंगे, तो इससे बचने के लिए गतिशील पूँजी की जरूरतों के अनुसार नई नीतियाँ तैयार करनी होंगी, जो कि राष्ट्रीय संस्कृति में गिरावट का कारण भी बन सकती हैं, इसलिए राजनीतिक रूप से राष्ट्र-राज्य संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष को महत्त्व देने लगे। फ्रांसीसी फुकुयामा, थॉमस फ्रीडमैन और कोनिची ओहमाए अति वैश्विकतावादी दृष्टिकोण के समर्थक हैं।

संशयवादी

संशयवादी वैश्वीकरण के एक वैचारिक उपकरण के रूप में देखते हैं। 19वीं शताब्दी में कार्ल मार्क्स ने पूँजीवादी संगठनों के अंतर्राष्ट्रीय चरित्र की ओर संकेत किया है क्योंकि पुराने राष्ट्र वैश्वीकरण से तनाव में हैं, इसलिए राष्ट्र का पुनरुत्थान हुआ। संशयवादियों के अनुसार वैश्विक संस्कृति राष्ट्रीय संस्कृति को प्रतिस्थापित नहीं कर सकती। आर्थिक रूप से वैश्वीकरण का विस्तार हर असमान रूप से हुआ माना गया। संशयवादियों के विश्लेषण में सत्ता, असमानता, संघर्ष और राष्ट्र-राज्यों के महत्त्व जैसे पहलुओं पर बल दिया गया था। पाल हर्सट और ग्राहम थॉम्पसन की पुस्तक ग्लोबलाइजेशन इन क्वेश्चन : द इंटरनेशनल इकोनॉमी एंड पॉसिबिलिटी ऑफ गवर्नेंस, उन्हें संशयवाद की दूसरी लहर के संशयवादी समर्थकों के रूप में प्रस्तुत करती है।

परिवर्तनवादी

अति वैश्विकतावादियों और संशयवादियों के बीच की तीसरी लहर परिवर्तनवादी कहलाती है और इस लहर के समर्थकों के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय परिवहन और संचार वृद्धि, पर्यावरण, ड्रग्स और अपराध जैसी समस्याओं के कारण राष्ट्रीय शक्तियाँ अन्य संस्थानों के साथ संप्रभुता साझा करने के लिए परिवर्तित हो जाती हैं। राजनीतिक रूप से राष्ट्र-राज्यों को कार्यकर्ताओं के रूप में देखा गया और उनका पुनर्गठन किया गया, जिसमें राष्ट्रीय संस्कृति वैश्विक संस्कृति का एक अंग मानी गई। डेविड हेल्ड और एंथोनी मैकग्रे, एंथनी गिडेंस और उलरिच बेक, जिनकी पुस्तकें 'द ग्लोबल ट्रांसफॉर्मेशनस रीडर : एन इंट्रोडक्शन टू द ग्लोबलाइजेशन डिबेट',

‘रनअवे वर्ल्ड और रिस्क सोसाइटी’ हैं, तीसरी लहर परिवर्तन के समर्थक हैं।

वैश्वीकरण एवं संप्रभुता

एक राज्य का अपने क्षेत्र पर पूर्ण अधिकार लोगों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्रता और एक संप्रभु राज्य के रूप में अन्य संप्रभु राज्यों द्वारा इसे मान्यता देना संप्रभुता कहलाता है। संप्रभुता के आंतरिक रूप में राज्य को अपने क्षेत्र के अंदर संपूर्ण, सर्वोच्च अधिकार है कि वह नागरिकों से उन कानूनों का पालन करवाता है और बाहरी रूप में अन्य राज्यों को मान्यता के साथ यह सुनिश्चित करता है कि राज्य के भीतरी मामलों में बाहर से दखलंदाजी न हो।

वैश्वीकरण की विभिन्न ताकतें राज्यों की संप्रभुता पर दबाव डालती हैं। जापानी विज्ञानी केनिची ओहमाए के अनुसार आधुनिक राष्ट्र-राज्य जो 18वीं, 19वीं शताब्दियों के अवयव का पतन शुरू हो गया है, का मानना है कि राष्ट्र-राज्य अभी भी वैश्विक राजनीति में एक खिलाड़ी हो सकता है, पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने की क्षमता खो दी है। वह बाजार के बिना नागरिकता की धारणा का कोई मतलब नहीं है, क्योंकि बाजार ही नागरिकता को तय करता है। गिडेंस के अनुसार राष्ट्र-राज्य का युग समाप्त हो चुका है। डेविड हेल्ड ने ऐसे क्षेत्र बताए हैं, जहाँ वैश्वीकरण ने संप्रभुता को कम कर दिया गया, जैसे कि विषम शक्तियाँ और शक्ति ब्लॉक, वैश्विक अर्थव्यवस्था, घरेलू नीति का अंत, अंतर्राष्ट्रीय संगठन और अंतर्राष्ट्रीय कानून। बहुराष्ट्रीय संगठनों द्वारा राज्य सरकारों पर दबाव डाला जाता है, जैसे कि आई.एम.एफ., विश्व बैंक आदि। विश्व बैंक तथा आई.एम.एफ. को राज्यों से सहायता माँगने से पहले अपने आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं का पुनर्गठन किया जाना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय कानून में मानवाधिकारों की मान्यता राष्ट्रीय सरकारों के साथ संघर्ष में आ सकती है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से मानवीय हस्तक्षेप को आमंत्रित किया जा सकता है। संप्रभुता का दूसरा आधार राज्य के आंतरिक वर्चस्व से संबंधित है, जो इसके सभी नागरिकों पर निर्भर है क्योंकि तकनीकी प्रगति नागरिकों को सक्रिय कर रही है, जैसे कि मोबाइल फोन और इंटरनेट।

वहीं वैश्वीकरण संप्रभुता को बदल रहा है। हालांकि हम देखते हैं कि संप्रभुता मुख्य रूप से राज्य से संबंधित है, परंतु यह विश्व बैंक, आई.एम.एफ. और यूरोपीय संघ जैसे राज्यों से परे कारकों में परिवर्तित हो सकती है। पॉल हर्स्ट के अनुसार, जब तक राष्ट्र-राज्य महत्वपूर्ण रहेंगे, तब तक संप्रभुता प्रासंगिक रहेगी और इसकी भूमिका और अभिव्यक्ति बदलने की पूरी संभावना रहेगी।

आलोचना

वैश्वीकरण के खेल में यूरोप और अमेरिका में औद्योगिक रूप से उन्नत देश विजेता रहे हैं, जबकि विकासशील और कम विकसित देशों में हारने वाले देश तथा दक्षिणी गोलार्ध के देश शामिल हैं। 2018 में ऑक्सफैम द्वारा बताया गया कि अमीरों की

बजाए गरीबों पर अधिक कर लगाया गया था। 2007-08 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद अवैश्वीकरण शब्द अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। वाल्डेन बेलो के अनुसार यह वैश्विक अर्थव्यवस्था का परिवर्तन है, जो कि अंतर्राष्ट्रीय निगमों की जरूरतों के आसपास लोगों, राष्ट्रों और समुदाय की जरूरतों के लिए एकीकृत है।

एंड्रयू हेवुड के अनुसार वैश्वीकरण बढ़े हुए जोखिम और अनिश्चितता के साथ जुड़ा हुआ है। वैश्वीकरण को पर्यावरण के उत्प्रेरक के रूप में भी देखा गया है क्योंकि बड़े पैमाने का उत्पादन, लाभ और उपभोक्तावाद पर जोर देकर वैश्वीकरण पर्यावरण पर दबाव बढ़ाता है।

वैश्वीकरण का लोकतंत्र पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अंतर्राष्ट्रीय निगमों के हाथों से आर्थिक और राजनीतिक शक्ति को केंद्रित करके लोकतंत्र उन्हें लोकतांत्रिक नियंत्रण से बचने का अधिकार देता है। राजनीतिक वैश्वीकरण की अपेक्षा आर्थिक वैश्वीकरण की गति तेज है क्योंकि आर्थिक गतिविधि की अपेक्षा राजनीति राष्ट्रीय सीमाओं के अंदर जारी है, जबकि आर्थिक प्रशासन के अंतर्राष्ट्रीय संस्थान वैश्विक पूँजी को ध्यान में रखने हेतु बहुत कमजोर हैं, जैसे कि विश्व बैंक और आई.एम.एफ. आदि। नोम चॉम्स्की द्वारा अमेरिका और उसके आर्थिक हितों पर हावी नवउदारवादी वैश्वीकरण की आलोचना की गई है। उनके अनुसार नवउदारवादी वैश्वीकरण से लोकतंत्र कमजोर होता है क्योंकि यह अंतर कॉर्पोरेट और राज्य के नेताओं की शक्ति को बढ़ाता है। चॉम्स्की के अनुसार, “निजीकरण प्रभावी लोकतांत्रिक विकल्प के क्षेत्र को कम करता है।”

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. वैश्वीकरण का क्या अर्थ है और इसके उद्भव के क्या कारण हैं?

उत्तर—आमतौर पर वैश्वीकरण को एक प्रक्रिया, एक स्थिति, एक प्रणाली, एक बल और एक युग के रूप में विभिन्न तरीकों द्वारा व्यक्त किया जाता है। कई विद्वानों द्वारा वैश्वीकरण के विभिन्न अर्थ बताए गए हैं, जैसे कि एंथनी गिडेंस के अनुसार वैश्वीकरण का अर्थ ‘दुनिया भर के सामाजिक संबंधों में निकटता से है, जो दूर के इलाकों को इस तरह से जोड़ता है कि कई मील की दूरी पर घटने वाली घटनाओं से दूरी वाली घटनाएँ प्रभावित होती हैं।

जॉन आर्ट स्कॉल्ट का मत है “चूँकि सीमाओं से परे संपर्क क्षेत्रीय सीमाओं को अप्रासंगिक बना देते हैं,” इसलिए वैश्वीकरण से दुनिया भर के लोगों के बीच वैश्विक क्षेत्रीय संबंधों का विकास होता है।” डेविड हार्वे द्वारा वैश्वीकरण को टाइम स्पेस कम्प्रेशन के रूप में परिभाषित किया गया है, जबकि डेविड हेल्ड के अनुसार “वैश्वीकरण को एक प्रक्रिया के रूप में माना जा सकता है, जो सामाजिक संबंधों और लेन-देन के स्थानिक संगठन में परिवर्तन का प्रतीक है, जिसका मूल्यांकन उसकी व्यापकता, तीव्रता, वेग और प्रभाव के संदर्भ में किया जाता है, जो अंतर-महाद्वीपीय या अंतर

4 / NEERAJ : वैश्विक राजनीति

क्षेत्रीय प्रवाह और गतिविधियों के नेटवर्क, संपर्क और शक्ति उत्पन्न करता है। उपर्युक्त परिभाषाओं द्वारा वैश्वीकरण के अर्थ में स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बातचीत, संचार और परिवहन में तकनीकी प्रगति के कारण समय और स्थान को शामिल किया गया है, जो कि विश्व भर में संपर्क का साधन है। वैश्वीकरण का अर्थ स्थानीयता और राष्ट्रीयता का वैश्विक स्तर पर अधीनता की अपेक्षा तीनों स्तरों में बातचीत का माध्यम है।

क्षेत्रीयता से परे अंतर्संबंध, गति, दीर्घकालिक प्रक्रिया और बहुस्तरीय प्रक्रिया के रूप में पाँच विशेषताएँ पाई गई हैं। पहली विशेषता क्षेत्रीयता से परे का अर्थ है कि इंटरनेट और मीडिया द्वारा दुनिया काफी निकट है, इसलिए भौगोलिक सीमाएँ कम प्रासंगिक होती हैं। इसके द्वारा एक देश में होने वाली घटनाएँ बहुत कम समय में विश्व भर में फैल जाती हैं। वैश्वीकरण की दूसरी विशेषता अंतर्संबंध मानी गई है। भौगोलिक सीमाओं की अप्रासंगिकता के कारण वैश्विक स्तर पर सभी कार्यकर्ताओं का आपसी संपर्क बंद रहा है, जैसे कि इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया द्वारा विश्व भर के नौजवानों को ऑनलाईन मीडिया और सोशल नेटवर्किंग साइट्स का इस्तेमाल कर आकर्षित किया गया। वैश्वीकरण की तीसरी विशेषता गति मानी गई है। सामाजिक गतिविधियों के तेज होने के कारण लोगों द्वारा सूचना और सेवाओं में तीव्र गति देखी गई है। वैश्वीकरण की चौथी विशेषता के रूप में वैश्वीकरण को दीर्घकालिक यानी लंबी अवधि की प्रक्रिया माना गया है। वैश्वीकरण की विशेषताएँ मानवता की शुरुआत से ही मानी गई हैं क्योंकि यह एक समकालीन घटना की अपेक्षा दीर्घकालिक प्रक्रिया है। इसकी पाँचवीं विशेषता वैश्वीकरण को बहुस्तरीय प्रक्रिया माना गया क्योंकि यह एकल विषय न होकर कई विषयों का समायोजन है। इसमें विभिन्न क्षेत्र पाए गए हैं, जैसे कि राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और प्रौद्योगिकी आदि।

वैश्वीकरण की उत्पत्ति में उन्नत प्रौद्योगिकी को वैश्वीकरण का सबसे महत्वपूर्ण कारण माना जाता है। प्रौद्योगिकी के माध्यम से विश्व भर में पारस्परिक जुड़ाव की भावना को बढ़ावा मिला है। इसके अलावा दूरसंचार, टेलीग्राफ, माइक्रोचिप एवं इंटरनेट जैसे आविष्कारों ने विश्व के विभिन्न देशों के बीच संचार की प्रणाली को बढ़ावा देने का कार्य किया है। वैश्वीकरण के तहत विश्व भर के विचारों, वस्तुओं, पूँजी एवं व्यक्तियों का प्रवाह, प्रौद्योगिकी के कारण बढ़ा है।

प्रश्न 2. डिजिटल वैश्वीकरण की अवधारणा की व्याख्या करें।

उत्तर—डिजिटल संचालित युग में वैश्वीकरण को 4.0 के रूप में व्यक्त किया गया है। डिजिटल वैश्वीकरण में वैश्विक अर्थव्यवस्था में पूँजी की गतिशीलता, एक-दूसरे पर आर्थिक निर्भरता और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका बढ़ने के कारण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था कम महत्वपूर्ण हुई है क्योंकि वित्तीय विनिमय के कम्प्यूटीकरण के कारण धन आदान-प्रदान पर राजनीतिक प्रतिबंध कम हो गए हैं।

इस प्रकार आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण राष्ट्र राज्यों को अपनी शक्ति, प्रभाव और संप्रभुता खोने का डर है, इसलिए गतिशील पूँजी की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए नए नियम अपनाने चाहिए। यह राष्ट्रीय संस्कृति की गिरावट का कारण भी बनती है। राजनीतिक रूप से राष्ट्र-राज्य, संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसे संगठनों को महत्व दिया जाता है। वैश्विकतावादी समर्थक जैसे कि फ्रांसीसी फुकुयामा, थॉमस फ्रीडमैन और केनिची ओहमाए का मानना है कि अंतर्राष्ट्रीय ताकतें राष्ट्रों की अपेक्षा अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति के मामलों में आगे सोचती हैं।

वैश्वीकरण का नया युग डिजिटल संचालन से शुरू होता है। यह युग औद्योगिक क्रांति की शुरुआत के साथ 1980 के दशक में तीव्र हुआ क्योंकि इस दशक से इंटरनेट, तेज परिवहन और संचार में तीव्रता आई। कम्प्यूटर द्वारा लोग अपने व्यवसाय के लिए विश्व के हर कोने से लाखों डॉलरों का आदान प्रदान कर सकते थे। ई-बैंकिंग और ई-कॉमर्स द्वारा यानी इंटरनेट द्वारा मूल्य श्रृंखलाओं के विश्व स्तर पर एकीकरण की सुविधा प्रदान की गई। अर्थव्यवस्था में कच्चे माल की आपूर्ति से लेकर अंतिम उपभोग तक सभी स्तर एकीकृत किया गया। यह माना गया है कि साल 2000 में वैश्विक आदान-प्रदान वैश्विक जी.डी.पी. की निर्धारित दर तक पहुँच गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि वैश्विक जी.डी.पी. का निर्यात $\frac{1}{4}$ तक पहुँच गया, इसके फलस्वरूप व्यापार, आयात और निर्यात का कुल योग बढ़कर वैश्विक जी.डी.पी. का $\frac{1}{2}$ हो गया।

डिजिटल वैश्वीकरण के अगले दौर में साइबर के माध्यम से डिजिटल अर्थव्यवस्था शामिल हुई, यथा—ई-कॉमर्स, डिजिटल सेवाएँ और 3 डी प्रिंटिंग। तीसरी औद्योगिक क्रांति की बजाए इस औद्योगिक क्रांति में कई नई तकनीकें, आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस और रोबोटिक्स आदि नए उपकरणों के रूप में विश्व से जुड़ीं। यह लहर औद्योगिक क्रांति की प्रौद्योगिकियों द्वारा संचालित लहर थी, इसलिए तकनीकी प्रगति के प्रभाव से विश्व का कोई कोना अछूता नहीं रहा। इस दौर के विषयों में शामिल थे—नई प्रौद्योगिकियाँ, अर्थव्यवस्थाओं और व्यापार को कैसे विकसित करेंगी और आकार देंगी। राजनीति तथा संस्कृति, अध्ययन और मूल्यांकन के विषय माने गए। वैश्वीकरण और उसके परिणामों के खिलाफ प्रतिक्रिया दिखाई दी, परंतु उदारवादियों द्वारा इस बात को स्वीकारा गया कि वैश्वीकरण ने लाभ के साथ अन्य को पीछे छोड़ दिया है, परंतु फिर भी वैश्वीकरण की प्रतिक्रिया में कई मुद्दे सामने आए, जैसे कि बढ़ती असमानता, सामाजिक अस्थिरता, सांस्कृतिक तनाव और ग्लोबल वार्मिंग आदि। कई देशों द्वारा प्रवेश के खिलाफ प्रतिक्रिया व्यक्त की गई जैसे कि अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप आदि। यह माना गया है कि विभिन्न जातीय और धर्मों से संबंधित समुदायों का प्रवेश राष्ट्रीय संस्कृतियों के लिए खतरा है। यह भी माना गया है कि